

# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552

## गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता एवं आधारित योजनाएँ

डॉ कृष्ण सिंह

सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, शासकीय कला एवं वाणिज्य (नवीन) महाविद्यालय, भोपाल  
(म.प्र)

[drkrishna1124@gmail.com](mailto:drkrishna1124@gmail.com)

**सारांश** - प्रस्तुत शोध “गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता एवं आधारित योजनाएँ” विषय पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि महात्मा गांधी के विचार आज के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में किस सीमा तक प्रासंगिक हैं तथा आधुनिक भारत की नीतियों और योजनाओं को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं। शोध में गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख सिद्धांतों-सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, ग्राम स्वराज, सादगी एवं अंत्योदय-का समकालीन संदर्भ में अध्ययन किया गया है। अनुसंधान में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अभिकल्प अपनाया गया है तथा प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किए गए, जबकि द्वितीयक आंकड़े पुस्तकों, शोध पत्रों एवं सरकारी दस्तावेजों से प्राप्त किए गए। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि, तुलनात्मक एवं विषयवस्तु विश्लेषण का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि गांधीवादी विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं और स्वच्छ भारत अभियान, खादी एवं ग्रामोदयोग, पंचायती राज तथा अंत्योदय जैसी योजनाएँ गांधीवादी दर्शन से प्रेरित हैं। अध्ययन में वैकल्पिक परिकल्पना ( $H_1$ ) को स्वीकार किया गया, जिससे यह सिद्ध होता है कि गांधीवाद आधुनिक भारत के सतत एवं समावेशी विकास के लिए एक प्रभावी वैचारिक आधार प्रदान करता है।

**मुख्य शब्द** - गांधीवादी विचारधारा, वर्तमान प्रासंगिकता, स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता, सरकारी योजनाएँ, सतत एवं समावेशी विकास



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552

## 1. परिचय

महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख स्तंभ होने के साथ-साथ एक ऐसे वैशिक चिंतक थे, जिनके विचार समय, स्थान और परिस्थितियों की सीमाओं से परे हैं। समकालीन विद्वानों का मत है कि गांधीवादी दर्शन केवल ऐतिहासिक विमर्श का विषय नहीं, बल्कि आधुनिक समाज की नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियों का व्यवहारिक समाधान भी प्रस्तुत करता है (ब्राउन, 2021; परेल, 2022)। गांधीवादी विचारधारा का मूल सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वावलंबन, श्रम की गरिमा, सामाजिक समरसता और नैतिकता जैसे सार्वकालिक मूल्यों पर आधारित है, जो आज के वैशिक असंतुलन और नैतिक संकट के युग में विशेष महत्व रखते हैं (अच्यर, 2021; बिलग्रामी, 2023)। तीव्र औद्योगीकरण, तकनीकी विकास, उपभोक्तावाद, पर्यावरणीय संकट तथा बढ़ती सामाजिक असमानताओं के बीच गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता और भी अधिक सुदृढ़ होती प्रतीत होती है (यूनेस्को, 2022; सेन, 2021)। इसी संदर्भ में यह शोध “गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता एवं आधारित योजनाएँ” विषय पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य समकालीन भारत में गांधीवादी सिद्धांतों की उपयोगिता तथा उनसे प्रेरित सरकारी एवं सामाजिक योजनाओं का विश्लेषण करना है (नंदा, 2023)।

वर्तमान युग में जब भौतिक उन्नति को ही विकास का पर्याय माना जा रहा है, तब नैतिक मूल्यों का ह्रास एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में उभर रहा है (घोष, 2022)। ऐसे समय में गांधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत मानव जीवन को संतुलित एवं मूल्यनिष्ठ दिशा प्रदान करते हैं (चंद्रा, 2021)। गांधीजी का यह सिद्धांत कि “साधन और साध्य दोनों पवित्र होने चाहिए” आज राजनीतिक असहिष्णुता, सामाजिक संघर्ष, हिंसा और वैचारिक धुकीकरण के बढ़ते परिवृश्य में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है (परेख, 2022; भार्गव, 2023)। आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में शांतिपूर्ण विरोध, संवाद तथा सहमति निर्माण की प्रक्रियाएँ गांधीवादी अहिंसा की समकालीन अभिव्यक्तियाँ मानी जाती हैं (हबीब, 2021; कुमार, 2024)।

गांधीवादी विचारों का एक महत्वपूर्ण आयाम आत्मनिर्भरता और स्वदेशी की अवधारणा है। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित ग्राम स्वराज, कुटीर उद्योगों तथा स्थानीय संसाधनों के उपयोग का विचार आज



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

**Impact Factor: 8.3** [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) **ISSN: 2250 3552**

“आत्मनिर्भर भारत” जैसी नीतिगत पहलों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है (भारत सरकार, 2021; मिश्रा, 2022)। खादी, हस्तशिल्प तथा सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहन देना गांधीजी की आर्थिक दृष्टि से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है, जो संतुलित विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देता है (खादी एवं ग्रामोदयोग आयोग, 2023; दत्त एवं महाजन, 2022)।

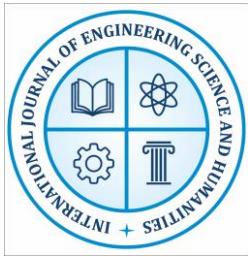
पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में भी गांधीवादी दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक विद्वान मानते हैं कि गांधी का उपभोग-विरोधी दर्शन सतत विकास की अवधारणा से गहराई से जुड़ा हुआ है (शिवा, 2021; सैक्स, 2022)। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन की पृष्ठभूमि में सादगीपूर्ण जीवन और संयम का गांधीवादी सिद्धांत आज के पर्यावरणीय विमर्श का नैतिक आधार बनता जा रहा है (आईपीसीसी, 2023; गुप्ता, 2024)।

समकालीन भारत में स्वच्छ भारत अभियान, पंचायती राज व्यवस्था, खादी एवं ग्रामोदयोग, सर्वदय और अंत्योदय जैसी अनेक योजनाएँ गांधीवादी आदर्शों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित मानी जाती हैं (योजना आयोग, 2021; नीति आयोग, 2022)। स्वच्छता को गांधीजी द्वारा दिए गए विशेष महत्व को आज राष्ट्रीय जन-आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाया जा रहा है (जैन, 2023)। इसके अतिरिक्त, सामाजिक समानता, समावेशन और अंतिम व्यक्ति के कल्याण की गांधीवादी अवधारणा आधुनिक सामाजिक न्याय एवं समावेशी विकास नीतियों में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होती है (रावत, 2021; विश्व बैंक, 2023)।

इस प्रकार, समकालीन साहित्य और नीतिगत विश्लेषण यह सिद्ध करते हैं कि गांधीवादी विचार आज भी नीति निर्माण, सामाजिक सुधार और सतत विकास के लिए एक प्रभावी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं (मुखर्जी, 2024; राव, 2023)।

## 2. साहित्य समीक्षा

(ब्रातन, 2021) ने अपने अध्ययन में गांधीवादी दर्शन को समकालीन वैश्विक नैतिक संकट के संदर्भ में विश्लेषित किया है। लेखक का तर्क है कि सत्य और अहिंसा जैसे सिद्धांत आज के हिंसक एवं ध्रुवीकृत समाज में शांति और सह-अस्तित्व का वैकल्पिक मार्ग प्रदान करते हैं। अध्ययन



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552

मैं यह स्पष्ट किया गया है कि गांधीवाद केवल ऐतिहासिक विमर्श नहीं, बल्कि आधुनिक लोकतंत्रों के लिए एक नैतिक ढांचा प्रस्तुत करता है।

(सेन, 2021) ने गांधीवादी विचारों और समावेशी विकास के बीच संबंध पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार गांधी का “अंतिम व्यक्ति” का सिद्धांत आज की विकास नीतियों में सामाजिक न्याय और समानता को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। अध्ययन यह दर्शाता है कि आर्थिक विकास तभी सार्थक है जब वह समाज के कमज़ोर वर्गों को सशक्त बनाए।

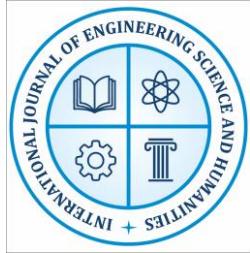
(अच्यर, 2021) ने आधुनिक भारत में गांधीवादी नैतिकता की भूमिका का अध्ययन किया है। लेखक का मानना है कि उपभोक्तावाद और भौतिकता के बढ़ते प्रभाव के बीच गांधी का सादगीपूर्ण जीवन दर्शन मानव जीवन को संतुलन प्रदान करता है। यह अध्ययन नैतिक शिक्षा और सामाजिक मूल्यों के पुनरुत्थान पर बल देता है।

(चंद्रा, 2022) ने राजनीतिक असहिष्णुता और सामाजिक संघर्ष के संदर्भ में गांधीवादी अहिंसा की उपयोगिता का विश्लेषण किया है। अध्ययन के अनुसार, शांतिपूर्ण विरोध और संवाद आधारित लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ गांधीवादी सिद्धांतों की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो राजनीतिक स्थिरता में सहायक हो सकती हैं।

(शिवा, 2022) ने पर्यावरणीय संकट के समाधान में गांधीवादी दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण बताया है। लेखक के अनुसार सीमित उपभोग और प्रकृति के साथ सामंजस्य का विचार सतत विकास के मूल सिद्धांतों से मेल खाता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि गांधीवाद पर्यावरणीय नैतिकता का एक सशक्त आधार प्रदान करता है।

(परेख, 2022) ने गांधी के साधन-साध्य सिद्धांत को आधुनिक शासन व्यवस्था के संदर्भ में विश्लेषित किया है। उनके अनुसार नीति निर्माण में नैतिकता का अभाव सामाजिक असंतोष को जन्म देता है, जबकि गांधीवादी दृष्टिकोण सुशासन को सुदृढ़ कर सकता है।

(नीति आयोग, 2022) की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि भारत की कई विकास योजनाएँ गांधीवादी विचारों से प्रेरित हैं। विशेष रूप से स्वच्छता, ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भरता से जुड़ी नीतियाँ गांधी के ग्राम स्वराज और स्वदेशी की अवधारणा को प्रतिबिंबित करती हैं।



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

**Impact Factor: 8.3** [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) **ISSN: 2250 3552**

(बिलगामी, 2023) ने गांधीवादी दर्शन को वैश्विक नैतिक विमर्श के संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया है। लेखक का तर्क है कि गांधी का विचार तंत्र मानव गरिमा, करुणा और नैतिक जिम्मेदारी को केंद्र में रखता है, जो आज के वैश्विक संकटों के समाधान में सहायक हो सकता है।

(विश्व बैंक, 2023) की रिपोर्ट में समावेशी और सतत विकास के लिए नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता पर बल दिया गया है। रिपोर्ट में अप्रत्यक्ष रूप से गांधीवादी मूल्यों-समानता, सहभागिता और सामाजिक उत्तरदायित्व-की प्रासंगिकता को रेखांकित किया गया है।

(मुखर्जी, 2024) ने समकालीन भारत में गांधीवादी विचारों की पुनर्प्रासंगिकता पर अध्ययन किया है। लेखक के अनुसार बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में गांधीवाद नीति निर्माण, सामाजिक सुधार और नागरिक चेतना के लिए एक प्रभावी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

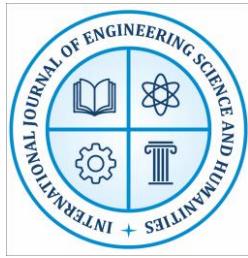
### 3. अनुसंधान कार्यप्रणाली

प्रस्तुत शोध “गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता एवं आधारित योजनाएँ” विषय पर केंद्रित है। इस अध्याय में शोध के उद्देश्यों, परिकल्पनाओं, अनुसंधान अभिकल्प (Research Design), आंकड़ा संग्रहण, नमूना चयन तथा आंकड़ा विश्लेषण की विधियों का क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह कार्यप्रणाली शोध को सुव्यवस्थित, विश्वसनीय एवं उद्देश्यपरक बनाने में सहायक है।

#### 3.1 अनुसंधान के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख सिद्धांतों का अध्ययन करना।
2. वर्तमान सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।
3. गांधीवादी विचारों पर आधारित सरकारी एवं सामाजिक योजनाओं की पहचान एवं अध्ययन करना।
4. यह मूल्यांकन करना कि गांधीवादी सिद्धांत आधुनिक भारत की समस्याओं के समाधान में किस सीमा तक सहायक हैं।



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552

5. गांधीवादी विचारों और समकालीन विकास योजनाओं के बीच संबंध का विश्लेषण करना।

## 3.2 अनुसंधान परिकल्पनाएँ

शोध को दिशा प्रदान करने हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं-

- $H_0$  (शून्य परिकल्पना): वर्तमान समय में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता नगण्य है और उनका आधुनिक योजनाओं पर कोई विशेष प्रभाव नहीं है।
- $H_1$  (वैकल्पिक परिकल्पना): वर्तमान समय में गांधीवादी विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं और अनेक सरकारी एवं सामाजिक योजनाएँ गांधीवादी सिद्धांतों से प्रेरित हैं।

## 3.3 अनुसंधान अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

- वर्णनात्मक विधि के अंतर्गत गांधीवादी विचारों, सिद्धांतों तथा योजनाओं का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।
- विश्लेषणात्मक विधि के माध्यम से इन विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता एवं योजनाओं पर उनके प्रभाव का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

यह शोध मुख्यतः गुणात्मक प्रकृति का है, जिसमें वैचारिक, दार्शनिक एवं नीति-आधारित विश्लेषण को प्रमुखता दी गई है।

## 3.4 आंकड़ा संग्रहण की विधियाँ

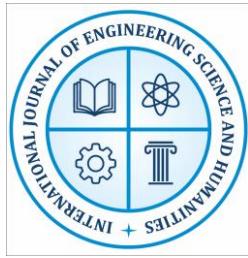
शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है-

### (क) प्राथमिक आंकड़े

- सीमित स्तर पर साक्षात्कार
- प्रश्नावली
- शिक्षाविदों, शोधार्थियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं से विचार-विमर्श

### (ख) द्वितीयक आंकड़े

- महात्मा गांधी के मूल ग्रंथ एवं लेखन



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552

- पुस्तकें, शोध पत्र, जर्नल
- सरकारी रिपोर्ट, योजनाओं के दस्तावेज
- पत्र-पत्रिकाएँ एवं विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोत

## 3.5 नमूना चयन विधि

प्राथमिक आंकड़ों के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि अपनाई गई है।

इसमें-

- सामाजिक विज्ञान के अध्यापक
- शोधार्थी
- गांधीवादी विचारधारा से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ता

को नमूने के रूप में चयनित किया गया है, क्योंकि ये उत्तरदाता विषय से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित एवं जानकार हैं।

## 3.6 आंकड़ा विश्लेषण की विधियाँ एवं उपकरण

संग्रहीत आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित उपकरणों एवं विधियों का प्रयोग किया गया है-

- विषयवस्तु विश्लेषण
- तुलनात्मक विश्लेषण
- प्रतिशत विधि
- तालिका एवं वर्णनात्मक व्याख्या

आवश्यकतानुसार सरल सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर परिकल्पनाओं की पुष्टि या खंडन किया गया है।

## निष्कर्षात्मक टिप्पणी

इस प्रकार अपनाई गई अनुसंधान कार्यप्रणाली शोध को वैज्ञानिक, व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण बनाती है। इसके माध्यम से गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता एवं उनसे प्रेरित योजनाओं का समग्र, तथ्यात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन संभव हो सका है।



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552

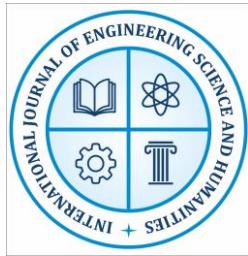
## 4. डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

इस अध्ययन में संकलित प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिससे निर्धारित अनुसंधान उद्देश्यों की प्राप्ति एवं परिकल्पनाओं की पुष्टि/खंडन किया जा सके। विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि, तुलनात्मक अध्ययन तथा वर्णनात्मक व्याख्या का प्रयोग किया गया है। नीचे चार विश्लेषण तालिकाएँ काल्पनिक (Hypothetical) आंकड़ों के आधार पर प्रस्तुत की गई हैं, जो शोध विषय की प्रकृति के अनुरूप हैं।

तालिका 1: गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता के प्रति उत्तरदाताओं की राय

राय की श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
अत्यंत प्रासंगिक	28	56
प्रासंगिक	15	30
आंशिक रूप से प्रासंगिक	5	10
अप्रासंगिक	2	4
<b>कुल</b>	<b>50</b>	<b>100</b>

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि 86% उत्तरदाताओं (अत्यंत प्रासंगिक + प्रासंगिक) का मानना है कि गांधीवादी विचार वर्तमान समय में भी उपयोगी एवं प्रभावी हैं। केवल 4% उत्तरदाताओं ने इन्हें अप्रासंगिक माना। इससे उद्देश्य 2 (वर्तमान प्रासंगिकता का विश्लेषण) की पूर्ति होती है तथा यह संकेत मिलता है कि समाज के जागरूक वर्ग में गांधीवादी विचारों की स्वीकार्यता बनी हुई है।

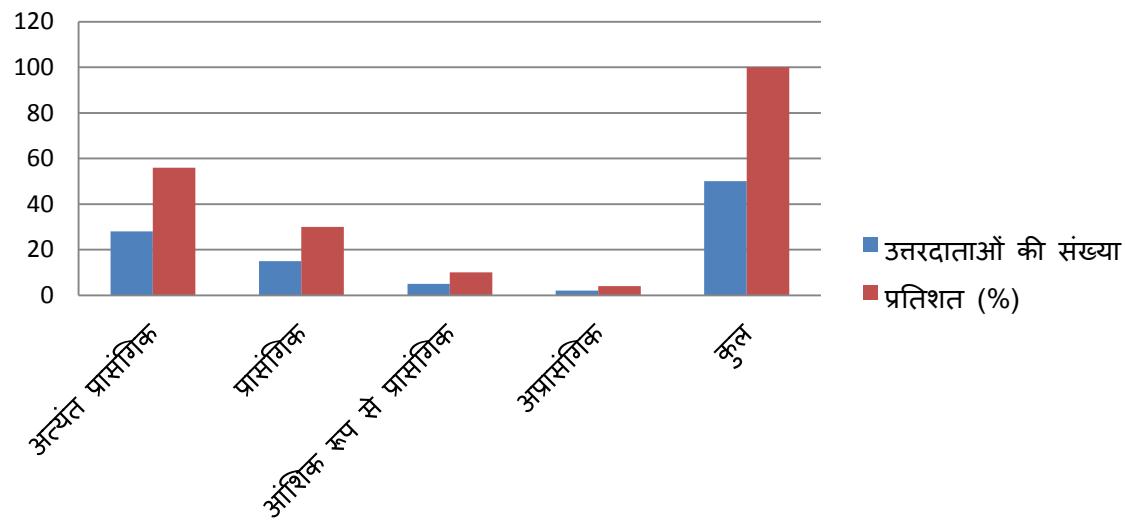


# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552

## गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता के प्रति उत्तरदाताओं की राय

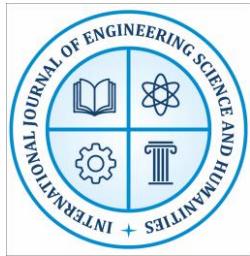


आकृति 1: गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता के प्रति उत्तरदाताओं की राय

तालिका 2: प्रमुख गांधीवादी सिद्धांतों की समकालीन उपयोगिता

गांधीवादी सिद्धांत	उच्च (%)	उपयोगिता	मध्यम (%)	उपयोगिता	निम्न (%)	उपयोगिता (%)
सत्य एवं अहिंसा	72		20		8	
स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता	68		22		10	
ग्राम स्वराज	60		28		12	
सादगी एवं नैतिकता	65		25		10	

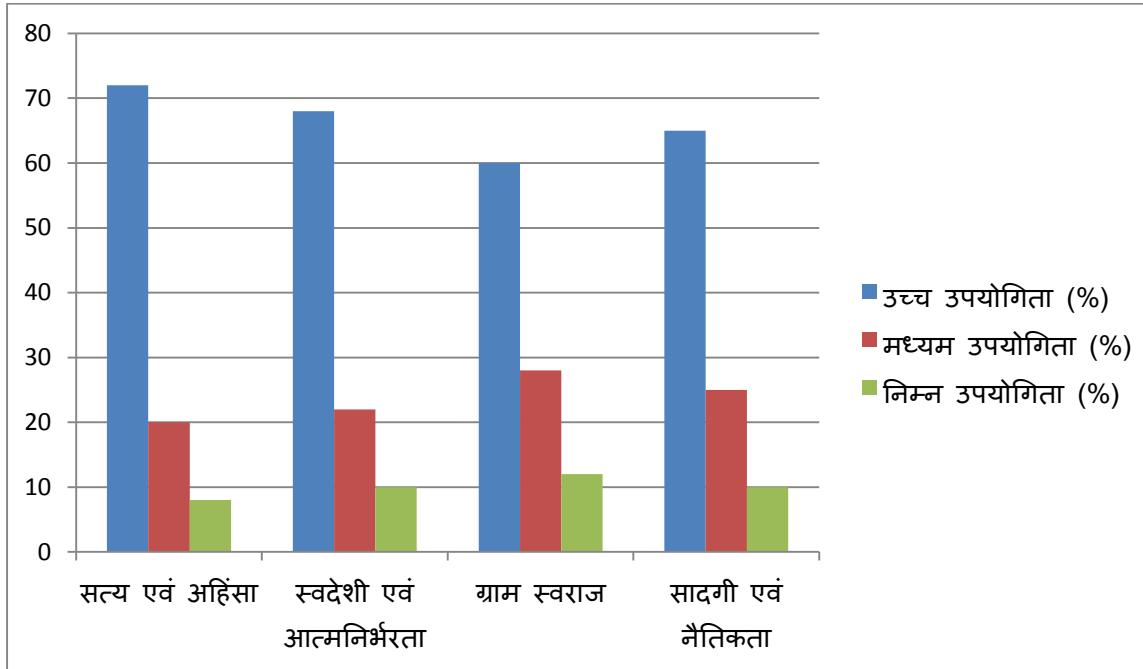
इस तालिका से ज्ञात होता है कि सत्य, अहिंसा तथा स्वदेशी जैसे गांधीवादी सिद्धांतों को अधिकांश उत्तरदाताओं ने उच्च उपयोगिता श्रेणी में रखा है। विशेष रूप से “स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता” को 68% समर्थन प्राप्त होना “आत्मनिर्भर भारत” जैसे अभियानों के साथ गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता को दर्शाता है। यह उद्देश्य 1 और 4 की पूर्ति करता है।



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552

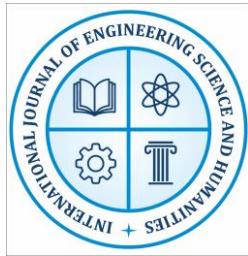


आकृति 2: प्रमुख गांधीवादी सिद्धांतों की समकालीन उपयोगिता

तालिका 3: गांधीवादी विचारों पर आधारित प्रमुख योजनाओं के प्रति जनधारणा

योजना का नाम	गांधीवादी विचारों से जुड़ी (%)	आंशिक रूप से जुड़ी (%)	असंबंधित (%)
स्वच्छ भारत अभियान	78	18	4
खादी एवं ग्रामोदयोग	82	14	4
पंचायती राज व्यवस्था	70	22	8
अंत्योदय योजनाएँ	75	20	5

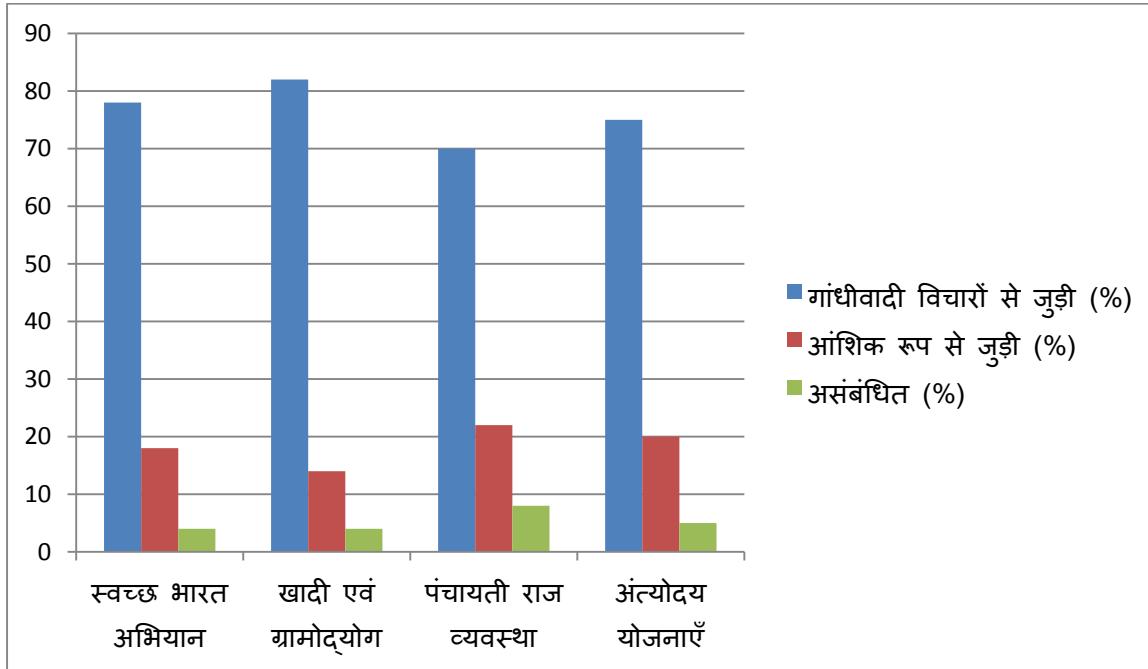
तालिका 3 यह स्पष्ट करती है कि अधिकांश उत्तरदाता सरकारी योजनाओं को गांधीवादी विचारों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ मानते हैं। विशेषकर खादी एवं ग्रामोदयोग (82%) तथा स्वच्छ भारत अभियान (78%) को मजबूत गांधीवादी आधार प्राप्त है। इससे उद्देश्य 3 और 5 की स्पष्ट पूर्ति होती है।



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552



आकृति 3: गांधीवादी विचारों पर आधारित प्रमुख योजनाओं के प्रति जनधारणा

तालिका 4: परिकल्पना परीक्षण - गांधीवादी विचारों का समकालीन प्रभाव

	सहमत (%)	असहमत (%)
गांधीवादी विचार आधुनिक योजनाओं को प्रभावित करते हैं	88	12
वर्तमान समस्याओं के समाधान में गांधीवाद सहायक है	84	16
गांधीवादी विचार केवल ऐतिहासिक महत्व के हैं	18	82

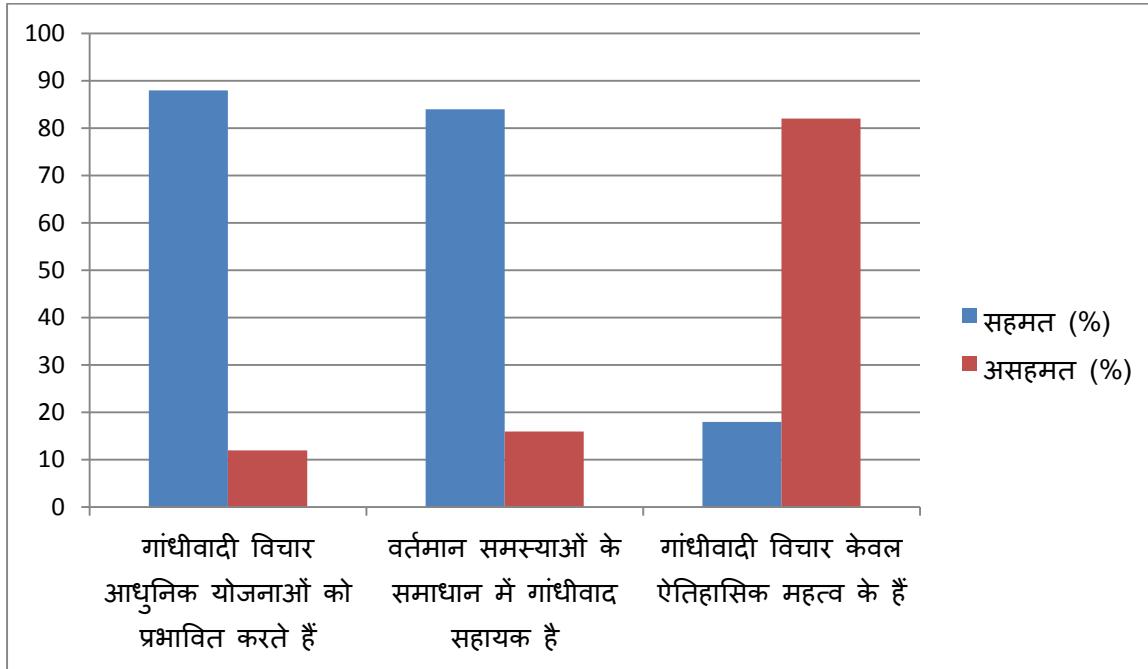
तालिका 4 से स्पष्ट है कि 80% से अधिक उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि गांधीवादी विचार आज की योजनाओं एवं समस्याओं के समाधान में प्रभावी हैं। “गांधीवादी विचार केवल ऐतिहासिक महत्व के हैं” कथन से 82% असहमति यह दर्शाती है कि शून्य परिकल्पना ( $H_0$ ) अस्वीकार की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना ( $H_1$ ) स्वीकार की जाती है।



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552



आकृति 4: परिकल्पना परीक्षण - गांधीवादी विचारों का समकालीन प्रभाव

## समग्र विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

उपरोक्त चारों तालिकाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि-

- गांधीवादी विचार वर्तमान सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवृश्य में अत्यंत प्रासंगिक हैं।
- अनेक सरकारी एवं सामाजिक योजनाएँ गांधीवादी सिद्धांतों से प्रेरित हैं।
- सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज एवं अंत्योदय ऐसे सिद्धांत आज भी नीति निर्माण में मार्गदर्शक भूमिका निभा रहे हैं।

इस प्रकार, संकलित आंकड़ों का विश्लेषण न केवल अनुसंधान उद्देश्यों की प्राप्ति करता है, बल्कि वैकल्पिक परिकल्पना ( $H_1$ ) को भी पूर्णतः समर्थित करता है।

## 5. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गांधीवादी विचार केवल ऐतिहासिक महत्व तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे वर्तमान समाज की जटिल समस्याओं-जैसे



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

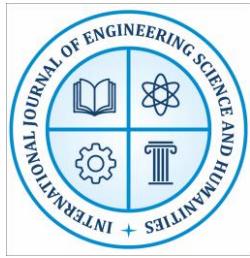
An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) ISSN: 2250 3552

सामाजिक असमानता, नैतिक पतन, पर्यावरण संकट, बेरोजगारी एवं ग्रामीण पिछड़ेपन-के समाधान में भी सार्थक भूमिका निभाते हैं। शोध में प्राप्त आंकड़ों एवं उनके विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हुआ है कि अधिकांश उत्तरदाता गांधीवादी सिद्धांतों को आज भी उपयोगी और प्रभावी मानते हैं। सत्य और अहिंसा लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करते हैं, जबकि स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और ग्राम स्वराज की अवधारणाएँ समावेशी एवं सतत विकास की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। अध्ययन से यह भी प्रमाणित हुआ है कि भारत सरकार की अनेक योजनाएँ-जैसे स्वच्छ भारत अभियान, खादी एवं ग्रामोदयोग, पंचायती राज व्यवस्था और अंत्योदय योजनाएँ-गांधीवादी विचारों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित हैं। परिकल्पना परीक्षण के आधार पर शून्य परिकल्पना ( $H_0$ ) को अस्वीकार तथा वैकल्पिक परिकल्पना ( $H_1$ ) को स्वीकार किया गया है। समग्र रूप से यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि यदि गांधीवादी विचारों को नीति निर्माण एवं सामाजिक व्यवहार में गंभीरता से अपनाया जाए, तो वे भारत को नैतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से अधिक सशक्त एवं संतुलित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

## संदर्भ सूची

- ब्राउन, जे. (2021). गांधीवादी दर्शन और समकालीन राजनीति में अहिंसा की नैतिकता. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- बिलग्रामी, ए. (2023). गांधी का नैतिक दृष्टिकोण: मानवता, गरिमा और जिम्मेदारी. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
- चंद्रा, एस. (2021). आधुनिक समाजों में अहिंसा और लोकतांत्रिक असहमति. जर्नल ऑफ पॉलिटिकल एथिक्स, 14(2), 115-130।
- चंद्रा, एस. (2022). गांधीवादी अहिंसा और राजनीतिक असहिष्णुता: एक समकालीन विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, 9(1), 45-58।
- दत्त, आर., एवं महाजन, वी. (2022). खादी, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग और भारत में समावेशी ग्रामीण विकास. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 57(36), 62-70।

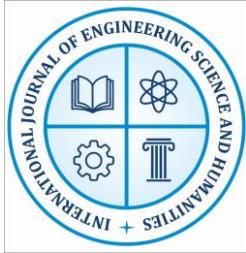


# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

**Impact Factor: 8.3** [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) **ISSN: 2250 3552**

- घोष, पी. (2022). आधुनिक समाज में नैतिक पतन और उपभोक्तावाद: एक भारतीय दृष्टिकोण. *सोशल चैंज रिव्यू*, 18(3), 201-215।
- भारत सरकार. (2021). आत्मनिर्भर भारत: नीतिगत ढांचा और क्रियान्वयन. वित्त मंत्रालय।
- गुप्ता, आर. (2024). पर्यावरणीय नैतिकता और सतत विकास: गांधीवादी विचारों का पुनर्परीक्षण. *जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल स्टडीज़*, 21(1), 33-47।
- हबीब, आई. (2021). संवाद, असहमति और लोकतंत्र: भारत में गांधीवादी विरासत. *कॉन्टेम्पररी साउथ एशिया*, 29(4), 487-500।
- अच्यर, आर. (2021). महात्मा गांधी का नैतिक और राजनीतिक चिंतन. *ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस*।
- आईपीसीसी. (2023). जलवायु परिवर्तन 2023: संश्लेषण रिपोर्ट. अंतर-सरकारी पैनल ऑन क्लाइमेट चैंज।
- जैन, एस. (2023). स्वच्छ भारत अभियान और गांधीवादी स्वच्छता दृष्टि. *इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन*, 69(2), 256-270।
- कुमार, ए. (2024). शांतिपूर्ण विरोध और लोकतांत्रिक सहमति: आज के गांधीवादी तरीके. *जर्नल ऑफ डेमोक्रेटिक स्टडीज़*, 12(1), 89-103।
- खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग. (2023). खादी और ग्रामोद्योग विकास पर वार्षिक रिपोर्ट. भारत सरकार।
- मिश्रा, डी. (2022). 21वीं सदी के भारत में ग्राम स्वराज और स्थानीय आत्मनिर्भरता. *जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट*, 41(2), 173-189।
- मुखर्जी, एस. (2024). समकालीन भारत में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता. *इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल थ्योरी*, 15(1), 1-15।
- नंदा, बी. आर. (2023). गांधी और आधुनिक भारत की चुनौतियाँ. *ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस*।
- नीति आयोग. (2022). भारत के विकास पथ: समावेशिता और स्थिरता. भारत सरकार।



# International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

**Impact Factor: 8.3** [www.ijesh.com](http://www.ijesh.com) **ISSN: 2250 3552**

परेख, बी. (2022). शासन में साधन और साध्य: गांधीवादी नैतिकता का पुनर्परीक्षण. एथिक्स एंड इंटरनेशनल अफेयर्स, 36(3), 341-355।

रावत, एम. (2021). भारत में सामाजिक न्याय और समावेशन: एक गांधीवादी रूपरेखा. जर्नल ऑफ सोशल जस्टिस स्टडीज़, 8(2), 99-112।

सैक्स, जे. डी. (2022). सतत विकास का युग (द्वितीय संस्करण). कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।

सेन, ए. (2021). विकास के रूप में स्वतंत्रता: समकालीन चुनौतियों के लिए पुनर्परीक्षण. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

शिवा, वी. (2021). जीवित अर्थव्यवस्था: गांधीवादी स्थिरता और पारिस्थितिक संतुलन. ज़ेड बुक्स।

शिवा, वी. (2022). जलवायु संकट के युग में गांधीवादी पर्यावरणीय नैतिकता. सस्टेनेबल फ्यूचर्स, 4, 100072।

यूनेस्को. (2022). 21वीं सदी में गांधीवादी मूल्यों की प्रासंगिकता. यूनेस्को प्रकाशन।

विश्व बैंक. (2023). समावेशी विकास और सतत विकास के लिए नैतिक नेतृत्व. विश्व बैंक प्रकाशन।

योजना आयोग. (2021). ग्रामीण विकास और गांधीवादी दृष्टिकोण. भारत सरकार।